में पूर्ण एवं शाश्वती शान्ति का आस्वादन करते हैं।

नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानामेको बहूनां यो विदधाति कामान्।
तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां शान्तिः शाश्वती नेतरेषाम्।।
(कठ० २.२.१३)

श्रीभगवान् ने अर्जुन के हृदय में जिस वैदिक सत्य का संचार किया, वही संसार के उन सब व्यक्तियों को प्रदान किया जाता है, जो महापण्डित का रूप तो धारण किए हुए हैं, परन्तु यथार्थ में अल्पज्ञ ही हैं। श्रीभगवान् स्पष्ट कह रहे हैं कि स्वयं उनका, अर्जुन का तथा युद्ध भूमि में एकत्र हुए सब राजाओं का अपना-अपना शाश्वत् निजी स्वरूप है; जीवात्माओं की बद्ध एवं मुक्त, दोनों ही अवस्थाओं में वे उन सबके भर्ता हैं। भगवान् परम पुरुष स्वरूप हैं तथा उनके नित्य पार्षद अर्जुन का और वहाँ एकत्रित हुए सब राजाओं का भी अपना-अपना शाश्वत् स्वरूप है। ऐसा नहीं कि पूर्व में उनका अपना-अपना अलग स्वरूप नहीं था, अथवा आगे नित्य नहीं रहेगा। उनका निजी स्वरूप पूर्व में भी था तथा भविष्य में भी निरन्तर रहेगा। इसलिए किसी के लिए भी शोक का कोई युक्तिसंगत हेतु नहीं है।

मायावादियों का कहना है कि मायावरण के कारण पृथक् हुआ जीवात्मा मुक्ति के उपरान्त निर्विशेष ब्रह्म से सायुज्य प्राप्त कर अपना भिन्न स्वरूप खो बैठता है। परम प्रमाण भगवान् श्रीकृष्ण ने यहाँ इस मत का खण्डन किया है। यहाँ इस मत का भी खण्डन है कि हम बद्धावस्था में अपने भिन्न-स्वरूप की कल्पना मात्र कर लेते हैं। इस श्लोक में श्रीकृष्ण का स्पष्ट वक्तव्य है कि उपनिषदों के अनुसार श्रीभगवान् तथा जीवात्माओं के अपने-अपने स्वरूप भविष्य में भी नित्य विद्यमान रहेंगे। श्रीकृष्ण का यह कथन प्रामाणिक है, क्योंकि वे माया के आधीन नहीं हो सकते। यदि जीव और भगवान् से स्वरूप में द्वैत सत्य नहीं होता तो भगवान् श्रीकृष्ण उसे इतना महत्त्व नहीं देते। उन्होंने तो यहाँ तक कह दिया है भविष्य में भी स्वरूप-भेद बना रहेगा। मायावादी तर्क कर सकते हैं कि श्रीकृष्ण द्वारा कहा गया स्वरूप-द्वैत आत्मा में नहीं है, अपितु प्राकृत है। परन्तु यदि स्वरूप-भेद को प्राकृत मान लिया जाय तो श्रीकृष्ण के स्वरूप का वैशिष्ट्य ही क्या रहेगा? श्रीकृष्ण ने स्पष्ट कहा है कि पूर्व में उनका अपना विशिष्ट स्वरूप था और भविष्य में भी सदा रहेगा। उन्होंने अपने निजी स्वरूप का विविध प्रकार से वर्णन किया है और निर्विशेष ब्रह्म को अपने आधीन घोषित किया है। श्रीकृष्ण का दिव्य निजी स्वरूप शाश्वत् है। यदि उन्हें व्यष्टि-बुद्धि से युक्त साधारण बद्धजीव समझा जाय तो उनकी भगवद्गीता का प्रमाणिक शास्त्र के रूप में कुछ भी महत्त्व शेष नहीं रह जायगा। चार प्रकार के मानवीय दोषों वाला साधारण व्यक्ति श्रवणीय तत्त्व की शिक्षा देने के योग्य नहीं हो सकता। गीता ऐसे साहित्य की अपेक्षा परम उत्कृष्ट है। संसार की कोई भी पुस्तक भगवद्गीता की तुलना नहीं कर सकती। श्रीकृष्ण को साधारण मनुष्य मानने पर गीता का यह सम्पूर्ण माहात्म्य विलुप्त